The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

मुगलकालीन शहरों के विकास का अध्ययन

सर्वेष चतुर्वेदी

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19544701

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

शहरीकरण, सूबा, क़स्बा, बस्तियाँ

ABSTRACT

प्रस्तुत में लेख में मुग़ल कालीन शहरीकरण के बारे में अध्ययन किया गया है। मुगलकालीन में शासकों व जमीदारों की भूमिका, वाणिज्यिक गतिविधियों, परिवहन व संचार व्यवस्था के विकास, सरायों के निर्माण, सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों, धार्मिक स्थानों तथा बंदरगाहों की स्थिति के सन्दर्भ में शहरों के विकास को समझा गया है। प्रस्तुत लेख में शहरों की अवसंरचना पर भी प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

भारत में मुग़ल साम्राज्य की स्थापना के उपरांत उत्तर भारत में राजनीतिक स्थिरता का दौर आरम्भ हुआ। जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक प्रगति, प्रशासनिक एकीकरण तथा सांस्कृतिक उन्नति का वातावरण बना। मुग़ल शासकों की प्रशासनिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों ने शहर के विकास को मजबूत आधार प्रदान किया।

अध्ययन का उददेष्य

मुगल काल में शहरीकरण की प्रकृति और प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।

शहरों के विकास के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कारणों की व्याख्या करना।

प्रमुख मुगलकालीन शहरों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

शहरी जीवन की संरचना और वर्गीय विभाजन को समझना।

शहरीकरण के दीर्घकालीन प्रभावों का मूल्यांकन करना।

अध्ययन विधि

यह अध्ययन ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसमें मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इतिहासकारों जैसे इरफान हबीब, सतीश चंद्र और ए.एल. श्रीवास्तव के ग्रंथों, फारसी स्रोतों, यात्रा-वृत्तांतों (जैसे बर्नियर और मनूची) तथा प्रशासनिक अभिलेखों के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

कुछ इतिहासकार इस बात से सहमत है, कि शहरों के विकास में आर्थिक कारको का महत्वपूर्ण योगदान था जबकि कई इतिहासकार सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। दूसरी तरफ समकालीन यूरोपीय यात्रियों से जो विवरण प्राप्त हुआ है उनके अनुसार भारत में जो शहर थे। उनका स्वरूप सैनिक

छावनी जैसा था और वह गावों के अधिवेष उत्पादन पर निर्भर करते थे। मुग़ल काल में शहरों तथा कस्बों के विकास में प्रशासनिक क्षेत्रों के विभाजन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अकबर ने 1580 में सूबा व्यवस्था प्रारम्भ की जिस क्षेत्र में वह सूबा पड़ता था उसके भू भाग के नाम पर या वहाँ की राजधानी के नाम पर उसका नामकरण किया गया[1]। ये सूबे इलाहाबाद, आगरा, अवध, अजमेर, इहमदाबाद, बिहार, बंबाल, दिल्ली, काबुल, लाहौर, मुल्तान, मालवा थे[2]।

मुगलकाल में साम्राज्य तथा सूबों की राजधानी के अलावा शासकों तथा उनके जागीरदारों, जमीदारों एवं अधिकारियों ने अनेक कस्बों तथा शहरों की स्थापना की थी। अकबर के शासन काल में स्थापित नए शहर जलालबाद, तिलहर, अटक, नवशहर[3] इसी तरह जहाँगीर ने अनूप शहर व गोंडा तथा दिलीर खान ने शाहाबाद शहर की स्थापना की थी[4]। मुग़ल प्रशासनिक व्यवस्था धार्मिक सौहार्द और उत्पादन के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इस श्रेणी में ऐसे शहर हैं जो वाणिज्यिक गतिविधियों के केंद्र या उत्पादन के स्थल थे। अक्सर इस प्रकार के शहरों में दोनों गतिविधियाँ केंद्रित होती थी। इस कल में उत्तर भारत में अनेक ऐसे बड़े कस्बों और शहरों का विकास हुआ जो विशेष उत्पादन के लिए जाने जाते थे। विनिर्माण केंद्र के रूप में गुजरात के शहर अहमदाबाद, बड़ौदा भड़ौच, कैम्बे, सूरत, मुहम्मदाबाद, नौशारी, दभोई, बंगाल में काशिमबाजार, मालदा, ढाका, हूगली, राजमहल, मुर्शिदाबाद, सहबाजपुर, घोराघाट, बरकबकाबाद, सिलहट, बालीघाट, उड़ीसा में बालासोर थे।

इस अवधि में यूरोपीय कंपनियों के आवागमन से बालासोर, मद्रास (1639), बम्बई (1687) हुगली तथा कलकत्ता (1690) जैसे नए बंदरगाहों के रूप में शहरों का विकास हुआ। पुर्तगालियों के व्यापारिक क्रियाकलाप की तेजी से खम्बात, सूरत, गोवा, कालीकट, सतगांव जैसे व्यापारिक केन्द्रों के विकास को भी प्रोत्साहन मिला। अंग्रेज व्यापारियों के आगमन से मद्रास, कलकत्ता, बम्बई तथा कालीकट का उदय एवं विकास जुड़ा था[5]।

मुगलकाल के शहरीकरण की प्रक्रिया में परिवहन तथा संचार व्यवस्था ने बल प्रदान किया था। परिवहन के साधनों के विकास ने शहरों को अपने स्थानीय क्षेत्रों के साथ–साथ अन्य शहरों से जोड़ने का कार्य किया। अतः इस व्यवस्था

ने गैर कृषिगत वस्तुओं के उत्पादन को गति प्रदान किया जिसके परिणामस्वरूप गाँव कस्बा के रूप में तथा कस्बा शहर के रूप में परिवर्तित होने लगे थे[6]। मुगलकाल में भारत में मुख्य शहर एक दूसरे से निश्चित मार्गों द्वारा जुड़े हुए थे। इस समय के तात्कालिक स्त्रोत चहार–ए–गुलशन में तेरह मुख्य मार्गों का उल्लेख किया गया है। ये सभी सड़कें विशेष योजना के साथ तैयार की गयी थी और देश के महत्वपूर्ण शहरों को अपने मार्ग से जोड़ती हुई चली गयी थी।

मुगलकाल में सड़कों के किनारे तथा शहरों में यात्रियों की सुरक्षा तथा संचार व्यवस्था को मजबूत करने के लिए सराय का निर्माण किया गया था। यही सराय धारे–धीरे कस्बों तथा शहरों के रूप में विकसत हो गए थे। आरम्भ में ये सराय कस्बों के रूप में होते थे तथा धीरे–धीरे यह सराय शहरों के रूप में परिवर्तित हो गए। मुग़ल काल में शासकों, सूबेदारों स्थानीय अधिकारियों तथा व्यापारियों द्वारा सरायों का निर्माण तथा प्रबंधन का कार्य होता था[7]। विदेशी यात्रियों ने भी नगरों में सरायों का कार्य देखकर अत्यंत प्रभावित हुए। इस प्रकार जहाँ सराय एक तरफ नए शहरी केंद्र के रूप में परिवर्तित हो गए दूसरी ओर शहरों को बढ़ाने में सहायता प्रदान करके शहरीकरण की प्रक्रिया को बल प्रदान किया।

धार्मिक शहरों का उदय एवं विकास मंदिर, मस्जिद तथा सूफी संतों की दरगाह के कारण हुआ इन स्थानों पर शासकों ने कुओं, सराय तथा अन्य धार्मिक भवनों का निर्माण करवाया तथा यहाँ यात्रियों के आगमन के कारण उर्श तथा मेले का आयोजन किया जाता था। जिससे बाजार इत्यादि का विकास होने लगा था। इसके अंतर्गत मथुरा, बनारस, उज्जैन, प्रयाग, हरिद्वार थानेश्वर, गया, अयोध्या, नगरकोट, जगन्नाथ, सूरजकुंड, कन्नौज, अजमेर, बिहार सरीफ आदि आते थे[8]। अतः धार्मिक तत्वों ने भी शहरी करण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। लोगों की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उस स्थान पर बाजार मेले लगते थे। इस प्रकार मंदिर, मस्जिद, संतों की दरगाद प्राकृतिक रूप हस्तकला तथा वाणिज्य के केंद्र के रूप में बदलने लगे थे।

मुग़लकाल में सामरिक दृष्टिकोण के कारण छावनियों का निर्माण किया गया था। इन छावनियों के मकानों में सामान्य सैनिक बड़ी संख्या में नौकर तथा दरबार के साथ चलने वाले सेवक रहते थे। बाद में यहाँ सैनिक बस्तियाँ बस गयीं। अटक, असीरगढ़, राजमहल जैसे शहर इसी श्रेणी में आते थे[9]।

शहरी संरचना और योजना-

मुगलकालीन शहरों की योजना अत्यंत सुव्यवस्थित थी:

शहरों को प्रायः किलों या दीवारों से घेरा जाता था।

मुख्य मार्ग चौड़े और बाजारों से युक्त होते थे।

आवासीय क्षेत्र जाति और पेशे के आधार पर विभाजित होते थे।

जल प्रबंधन के लिए कुएँ, तालाब और नहरों की व्यवस्था होती थी।

मुगलकाल में शहरों की बसावट सामान्यतः नदियों के तटों के समीप ऊँचे स्थानों पर होते थे। इस कारण उनका स्वरूप सामान्यतः अर्ध चन्द्राकार होता था। नदियों के कारण शहर को सैन्य तथा सुरक्षा व्यवस्था में सहायता मिलती थी। इन शहरों की भौतिक अवस्थिति के कारण उपजाऊ, भूमि, उत्तम जल व्यवस्था तथा यातायात जैसी सुविधाएँ आसानी से प्राप्त हो जाती थी। शहर निर्माण योजना के अंतर्गत भवनों, बाजारों, कारखानों, दफ्तरों, पूजागृहों, मदरसों तथा उपवनों की समुचित व्यवस्था की जाती थी। शहरों में प्रवेश के लिए चारों दिशाओं में दरवाजों का निर्माण किया जाता था। इन शहरों में चौकसी के लिए ऊँची–ऊँची मीनारे भी बनाई जाती थी। 16 वी तथा 17 वीं सदी में मुगलकाल को शहरीकरण का स्वर्णयुग माना जाता है। मुगलकाल में शहरों की संख्या, आकार तथा उनकी धन सम्पदा में तेजी से वृद्धि हुई।

शहरीकरण के प्रभाव आर्थिकप्रभाव

व्यापार और उद्योग का विस्तार राज्य की आय में वृद्धि अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत की भागीदारी

सामाजिकप्रभाव

वर्ग विभाजन में वृद्धि सांस्कृतिक समन्वय शहरी जीवन शैली का विकास

सांस्कृतिकप्रभाव

कला और स्थापत्य का उत्कर्ष भाषाई विकास (उर्दू का उद्भव)

मुगलकालीन शहरीकरण की सीमाएँ

औद्योगिक क्रांति का अभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक निर्भरता

राजनीतिक अस्थिरता (उत्तरकाल में)

निष्कर्ष

मुगल काल में शहरों का विकास भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। यह केवल प्रशासनिक आवश्यकता का परिणाम नहीं था, बल्कि आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक विकास और सामाजिक परिवर्तन का भी द्योतक था। मुगलकालीन शहरों ने आधुनिक भारतीय शहरीकरण की नींव रखी।

इन शहरों की संरचना, बाजार व्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन आज भी भारतीय नगरों में परिलक्षित होते हैं। अतः मुगल काल का शहरीकरण भारतीय इतिहास के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

मानव सभ्यता के विकास में शहरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः शहरों के विकास एवं पतन का अध्ययन इतिहाकारों के लिए हमेशा अनुसन्धान का विषय रहा है। भारतीय इतिहास में शहरीकरण की प्रक्रिया नवीन नहीं है।

सन्दर्भ

1. जैरेट एच0एस0 (अ0 अनु0) सर यधुनात सरकार (संशोधित संस्करण) 'आइन–ए–अकबरी' भाग–2–अबुल फज़ल, नई दिल्लीः काउन पब्लिकेशन, 1988 पृष्ठ संख्या–129
2. सरण परमात्मा, मुगलों का प्रान्ती शासन (1526–1658) लखनऊ–राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल 1970 पृष्ठ संख्या 68–69
3. नकबी एच0के0 'अर्बन संटर्स एंड इंडस्ट्रीज इन अपर इंडिया' 1556–1803, बॉम्बेः एशिया पब्लिसिंग हाउस 1968 पृष्ठ 64
4. हैम्बले, गेबिन 'टाउन्स एंड सिटीज' द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, भाग–1–तपन राय चौधरी एंड इरफ़ान हबीब (संपादक) हैदराबाद ओरिएंट लांग मैन 1984 पृष्ठ 443
5. सरकार जे0 एन0 'स्टडीज उन इकॉनमी लाइफ इन मुग़ल इंडिया' दिल्ली ओरिएण्टल पब्लिसर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1975 पृष्ठ 209–10
6. नकबी एच0 के0 अर्बनाइजेसन एंड अर्बन सेटर्स अंडर द ग्रेट मुग़ल (1556–1707) भाग–1, शिमलाः इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी 1971 पृ0 सं0 58
7. फारूकी अबुल खैर मोहम्मद 'रोड्स एंड कम्युनिकेशन इन मुग़ल इंडिया' दिल्ली :प्रकाशन ईदराह–ए–अदबीयात–ए–दिल्ली, 2009 पृ सं 98
8. सरकार जे0 एन0 'स्टडीज इन इकॉनमी लाइफ इन मुग़ल इंडिया' दिल्ली ओरिएण्टल पब्लिसर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1975 पृ0 210–12
9- हैम्बले, गेबिन 'टाउन्स एंड सिटीज' द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, भाग–1– तपन राय चौधरी एंड इरफ़ान हबीब (संपादक) हैदराबाद ओरिएंट लांग मैन 1984 पृ0 439